ॐ

॥ परमात्मने नमः ॥

मङ्गल समर्पण

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रति समर्पित

एक व्यक्तित्व :

पण्डित कैलाशचन्द्र जैन

प्रेरक :

पवन जैन

अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश)

सम्पादक :

पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन

बिजौलियाँ (राजस्थान)

सम्पादक सलाहकार मण्डल :

पण्डित रतनचन्द भारिल्ल, जयपुर; **डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल**, जयपुर; **पण्डित ज्ञानचन्द जैन**, विदिशा; **पण्डित विमलचन्द झाँझरी**, उज्जैन; **बाल ब्रह्मचारी हेमन्त ए. गाँधी**, सोनगढ़; **बाल ब्रह्मचारी जतीशचन्द शास्त्री**, दिल्ली; **बाल ब्रह्मचारी हेमचन्द 'हेम'**, भोपाल; **पण्डित वीरेन्द्रकुमार जैन**, आगरा; **पण्डित प्रकाशचन्द्र जैन 'ज्योर्तिविद'**, मैनपुरी; **बाल ब्रह्मचारी अभिनन्दनकुमार शास्त्री**, देवलाली; **बाल ब्रह्मचारी सुमतप्रकाश जैन**, खनियाधाना; **पण्डित अभयकुमार शास्त्री**, देवलाली; **डॉ. राकेश जैन शास्त्री**, नागपुर; **डॉ. योगेश जैन**, अलीगंज; **पण्डित नेमचन्द जैन,** देहरादून; **पण्डित अशोक लुहाड़िया, पण्डित संजय शास्त्री, पण्डित सुधीर शास्त्री,** तीर्थधाम मङ्गलायतन

विदुषी **श्रीमती कुसुमलता पाटनी**, छिन्दवाड़ा; **श्रीमती बीना जैन**, देहरादून; **श्रीमती प्रिया जैन**, अलीगढ़; **श्रीमती सीमा जैन**, कोटा।

प्रकाशक

समस्त पावना एवं तीर्थधाम मङ्गलायतन परिवार

✦ विमलांचल, हरिनगर, अलीगढ़ -202001 (उ.प्र.)

✦ तीर्थधाम मङ्गलायतन, आगरा-अलीगढ़ मार्ग, सासनी-204216

मङ्गल समर्पण

शुभेच्छुक

✤

श्री आदिनाथ–कुन्दकुन्द–कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ के समस्त ट्रस्टीगण, संरक्षक मण्डल, सदस्यगण एवं सलाहकार मण्डल, हस्ते अध्यक्ष श्रीमान् अजितप्रसाद जैन, दिल्ली

✤

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट, सोनगढ़, हस्ते, श्री हसमुखभाई वोरा; **पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर,** हस्ते, श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल; **पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली,** हस्ते, श्री कान्तिभाई मोटाणी; **श्री आचार्य कुन्दकुन्द जैन जागृति सेन्टर, पौन्नूर,** हस्ते, श्री अनन्तराय ए. सेठ; **श्री वीतराग–विज्ञान स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट, अजमेर,** हस्ते, श्री पूनमचन्द लुहाड़िया; **श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट, ध्रुवधाम बांसवाड़ा,** हस्ते, श्री महीपाल जैन; **श्री कुन्दकुन्द–प्रवचन–प्रसारण संस्थान, उज्जैन,** हस्ते, श्री विमलदादा झांझरी; **श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट, सोनागिर,** हस्ते, श्री अनिल सेठी; **श्री कुन्दकुन्द–कहान पण्डित बाबूभाई मेहता चैरिटेबल ट्रस्ट, चैतन्यधाम, अहमदाबाद,** हस्ते, श्री अमृतभाई मेहता; **श्री कुन्दकुन्द–कहान–दिगम्बर जैन आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली,** हस्ते, श्री आदीश जैन

✤

श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, **नैरोबी;** श्री दिगम्बर जैन एसोसिएशन, **लन्दन;** श्री जैन स्वाध्याय मन्दिर सोनगढ़, **यूएसए;** श्री एस. एस. जैन फाउण्डेशन, टोरण्टो **कनाडा;** श्री फ्राइडे जैन स्वाध्याय ग्रुप, **दुबई;** श्री महावीरस्वामी जिन मन्दिर, **फिनिक्स- अमेरिका;** मुमुक्षु ऑफ नार्थ अमेरिका **(मोना);** जैन अध्यात्म एकेडॅमिक ऑफ नार्थ अमेरिका **(जाना)।**

✤

श्री कुन्दकुन्द–कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, **मुम्बई;** श्री दिगम्बर जैन महासमिति (केन्द्रीय) **दिल्ली;** अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद, **दिल्ली;** श्री अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, **जयपुर;** श्री वीर कुन्दकुन्द–कहान–निहाल सोगानी ट्रस्ट,, **भावनगर-कोलकाता;** श्री सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट, **भावनगर;** श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम केन्द्र, **भुज;** पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद, **जयपुर;** श्री कुन्दकुन्द–कहान स्मृति सभागृह ट्रस्ट, **आगरा;** श्री तीर्थधाम सिद्धायतन, **द्रोणगिरि;** श्री कुन्दकुन्द–कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, **कोटा;** श्री गजपन्था सिद्धक्षेत्र, **नासिक;** श्री महावीर ब्रह्मचारी आश्रम जैन गुरुकुल ट्रस्ट, कारंजा लाड, **वाशिम (महाराष्ट्र);** श्री ढ़ाईद्वीप जिनायतन, श्री कुन्दकुन्द–कहान–दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट, **इन्दौर;**

श्री कुन्दकुन्द–कहान–दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह, **सोनगढ़;** श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, **जयपुर;** श्री आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन, **दिल्ली;** श्री आचार्य कुन्दकुन्द विद्या निकेतन, **सोनागिरि;** ध्रुवधाम, **बाँसवाड़ा;** श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, **देहरादून;** श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, **बुलन्दशहर;** श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, **बिजौलियाँ;** श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, **छिन्दवाड़ा;** श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, **अशोकनगर;** श्री नन्दीश्वर सेवा संघ, **खनियाधाना;** श्री अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन एवं मुमुक्षु मण्डल, **मेरठ;** श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट एवं श्री महावीर विद्या निकेतन, **नागपुर;** श्री महावीरस्वामी दिगम्बर जिनमन्दिर, मङ्गलायतन विश्वविद्यालय, **बेसवां, अलीगढ़;** ॲसोसिएशन ऑफ **तीर्थधाम मङ्गलायतन** एलुमनी (ATMA) **तीर्थधाम मङ्गलायतन,** अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश)।

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन खण्डेलवाल मन्दिर पंचायत (रजि.) खिरनीगेट, **अलीगढ़** (उत्तरप्रदेश); श्री लखमीचन्द पाण्ड्या खण्डेलवाल दिगम्बर जैन ट्रस्ट, खिरनीगेट, **अलीगढ़** (उत्तरप्रदेश); श्री सकल दिगम्बर जैन समाज छपैटी, **अलीगढ़** (उत्तरप्रदेश); श्री जैन मन्दिर लेखराजनगर, सिविल लाईन, **अलीगढ़** (उत्तरप्रदेश); मङ्गलार्थी युवा प्रकोष्ठ, **अलीगढ़** (उत्तरप्रदेश); मङ्गलार्थी महिला प्रकोष्ठ, **अलीगढ़** (उत्तरप्रदेश); श्री दिगम्बर जैन समाज, **सासनी** (उत्तरप्रदेश); श्री दिगम्बर जैन समाज, **हाथरस** (उत्तरप्रदेश); **मङ्गलायतन विश्वविद्यालय, बेसवां, अलीगढ़** (उत्तरप्रदेश)।

मूलनायक
श्री आदिनाथ भगवान, तीर्थधाम मङ्गलायतन

मङ्गल समर्पण

1

मङ्गल प्रवेश

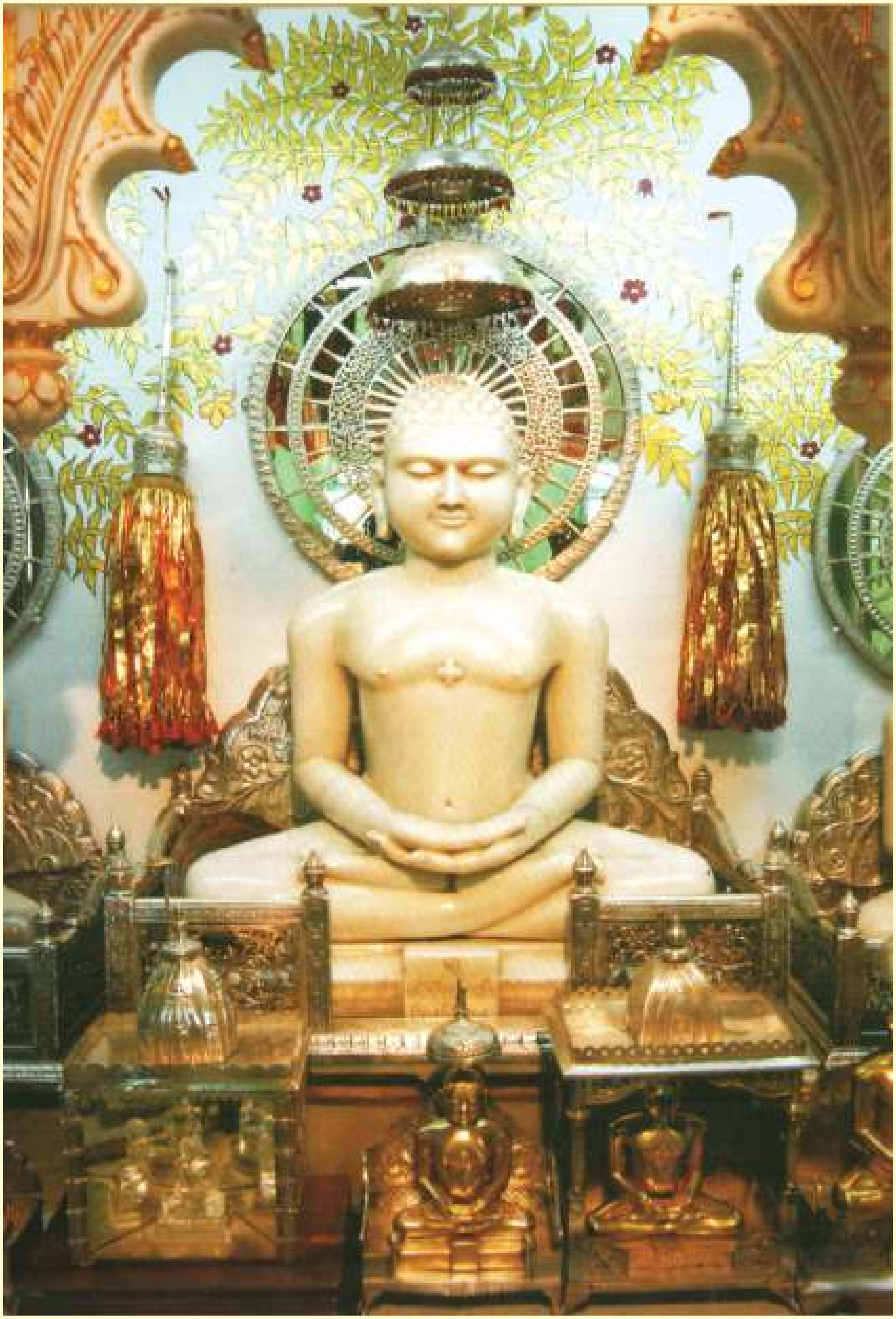

मूलनायक

श्री सीमन्धर भगवान, तीर्थधाम सोनगढ़

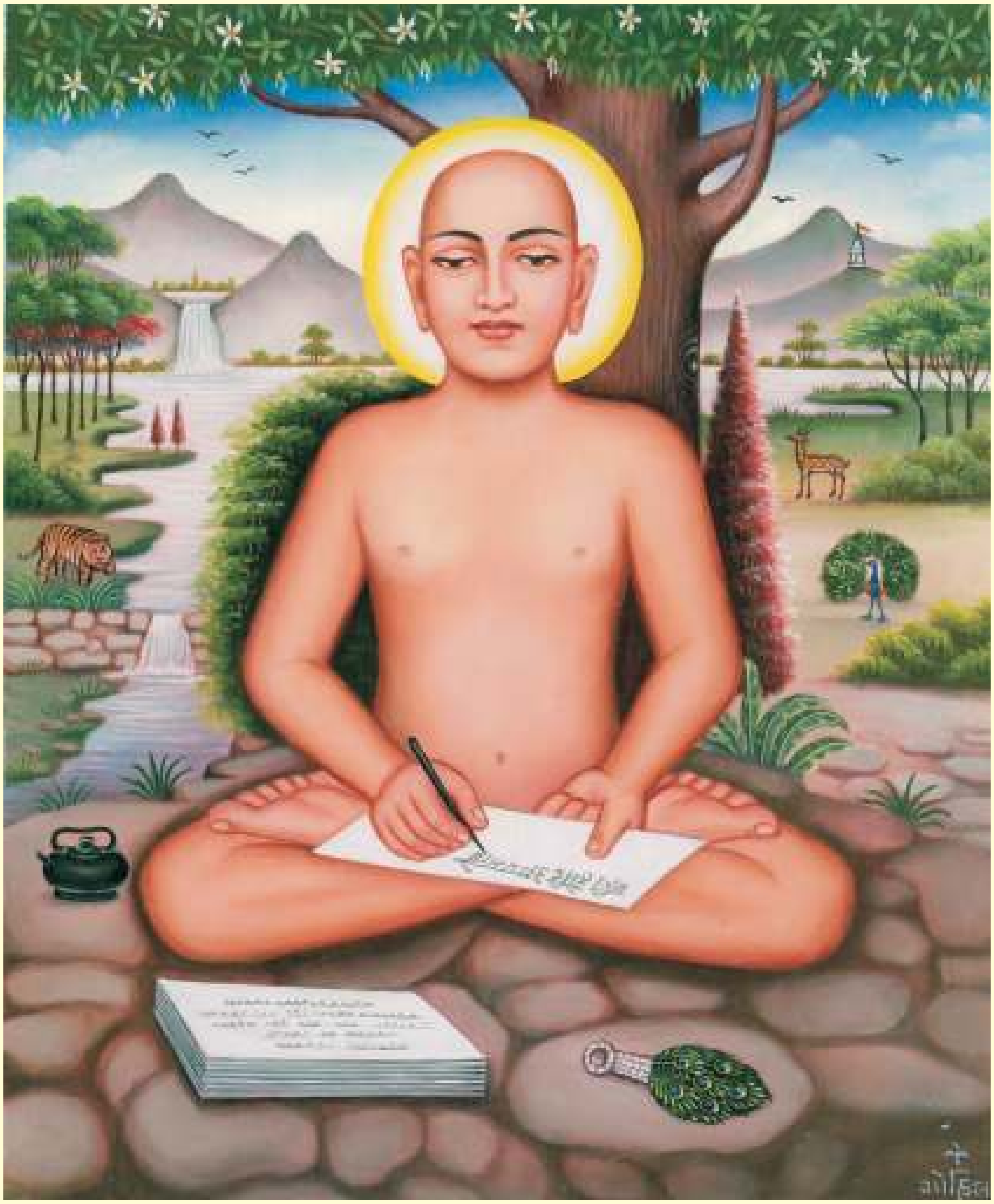

परम पूज्य आचार्य कुन्दकुन्ददेव

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

अध्यात्ममनीषी पण्डित कैलाशचन्द्र जैन

मङ्गल समर्पण

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रति समर्पित

एक व्यक्तित्व :

पण्डित कैलाशचन्द्र जैन

अध्यात्ममनीषी पण्डित कैलाशचन्द्र जैन की
जन्म-शताब्दी के उपलक्ष्य में
परिवारीजनों की भावपूर्ण प्रस्तुति

मङ्गल समर्पण

'मङ्गल समर्पण'
पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रति समर्पित
'एक व्यक्तित्व : पण्डित कैलाशचन्द्र जैन'

प्रथमावृत्ति : 1500 प्रतियाँ
(पण्डित कैलाशचन्द्र जैन, शताब्दी समारोह 'मङ्गल समर्पण' के अवसर पर, उनके परिवारीजनों की विनम्र प्रस्तुति))
दिनांक – 10 जून 2012

न्यौछावर : तत्त्वज्ञान की सही समझ एवं स्वभावसन्मुखता का उग्र पुरुषार्थ

प्राप्तिस्थान :
श्री पावना ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज
'विमलांचल', हरिनगर, अलीगढ़
फोन : 0571 – 2410010 / 11; फैक्स : 0571-2410019

तीर्थधाम मङ्गलायतन
अलीगढ़-आगरा मार्ग, सासनी-204216 (हाथरस) उत्तरप्रदेश
फोन : 9997996346; फैक्स : 0571-2410019
info@mangalayatan.com; www.mangalayatan.com

टाईप एवं चित्र सैटिंग :
मङ्गलायतन ग्राफिक्स :
विवेककुमार पाल एवं अतुल गौड़

मुद्रक:
दिनेश जैन शास्त्री
देशना कम्प्यूटर्स, जयपुर (राज०)

प्रकाशकीय

भारत देश, अर्थात् तीर्थङ्कर भगवन्तों, वीतरागी सन्तों एवं ज्ञानी धर्मात्माओं का देश! इसी देश में इस कल्पकाल में अवतरित भगवान आदिनाथ से भगवान महावीरस्वामी एवं उनकी परम्परा में हुए अनेकों वीतरागी सन्तों ने आत्महितकारी पवित्र जिनशासन की परम्परा को जीवन्त रखा है।

वर्तमान 20-21वीं शताब्दी में उसी परम्परा के आत्मसाधक के रूप में उदय हुआ आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का; जिन्होंने स्वयंबुद्ध की तरह पवित्र जिनशासन को प्राप्त करके, अपने सातिशय प्रभावनायोग से जैन सिद्धान्तों का जो प्रचार-प्रसार किया, वह निश्चित ही इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित एवं आश्चर्यकारी घटना है।

देश-विदेश की सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज में 'डण्डेवाले पण्डितजी' के दुलारे विशेषण से पहिचाने जाने-वाले मेरे पूज्य दादाश्री पण्डित कैलाशचन्द्रजी जैन, पूज्य गुरुदेवश्री के अनन्य शिष्य एवं अत्यन्त विश्वासपात्र मनीषी हैं; जिन्होंने सन् 1953 से ही पूज्य गुरुदेवश्री के द्वारा स्वयं सन्मार्ग प्राप्त किया और अत्यन्त करुण हृदय से उस सनातन सत्यमार्ग का प्रचार अखण्ड/अनवरतरूप से किया। मुझे अपने बचपन से ही वे लोरियों की भाँति इस तत्त्वज्ञान के सूत्र सिखाते / समझाते रहे हैं।

मेरे पूज्य पिताश्री पवन जैन एवं माताश्री श्रीमती आशा जैन ने बालघुट्टी में मुझे जो संस्कार दिये, दादाश्री ने, जब भी वे अपने प्रवास के दौरान अलीगढ़ होते, परिपुष्ट किया है।

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि पूज्य दादाजी अपने वर्तमान जीवन के शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। यह भी सौभाग्य की बात है कि वे इस उम्र में भी वीतरागी-देव-शास्त्र-गुरु, जिनशासन एवं पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति पूर्णत: सचेष्ट हैं। एक तो प्राय: इस उम्र तक व्यक्ति पहुँचता ही नहीं है; और कदाचित् पहुँच भी जाए तो प्राय: आर्त-रौद्रपरिणामय ही जीवन दृष्टिगोचर होता है। इस सन्दर्भ में जब मैं अपने दादाजी को देखता हूँ तो मेरा मन उनके प्रति श्रद्धा से ओत-प्रोत हो जाता है। **उनका शत् वर्षीय शान्त एवं आत्मसाधनामय जीवन, उनके सम्पूर्ण जीवन की तत्त्व-आराधना को प्रतिबिम्बित कर रहा है।**

यह एक सुखद प्रसङ्ग है कि पूज्य दादाजी के शताब्दी वर्ष के अवसर पर 'मङ्गल समर्पण' ग्रन्थ का प्रकाशन हमारे परिवार द्वारा किया जा रहा है। इसमें दादाजी के पुराने पत्र, डायरियाँ, प्रवचन आदि का संकलन तो है ही, साथ ही उनका ज्ञानियों के प्रति समर्पणभाव भी

मङ्गल समर्पण

दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण विश्व में उनके द्वारा उपकृत मुमुक्षु बन्धुओं के उद्‍गार भी इसमें समायोजित किये गये हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रन्थ, आध्यात्मिक प्रमेय से सराबोर पठनीय वस्तु बन गया है।

यह भी एक सुखद संकेत है कि पूज्य दादाजी के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करने हेतु आयोजित मङ्गल समर्पण समारोह में, पूज्य गुरुदेवश्री के प्रभावना उदय में स्थापित समस्त संस्थाएँ, आमन्त्रणकर्ता / निवेदक एवं शुभेच्छुक के रूप में; तथा विद्वान सम्पादकीय सलाहकार के रूप में सुशोभित हैं, जो पूज्य दादाश्री के नि:स्वार्थ, निस्पृह एवं विराट व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता है।

मेरे पूज्य दादाश्री के निकटवर्ती शिष्य श्री देवेन्द्रकुमार जैन, बिजौलियाँ के सम्पादकत्व एवं मेरे पूज्य पिताश्री पवन जैन के सहयोग तथा देश के सभी मूर्धन्य मनीषी विद्वानों के मार्गदर्शन में प्रकाशित यह 'मङ्गल समर्पण' ग्रन्थ, आत्मसमर्पण द्वार परिणति में 'मङ्गल' का कारण बने – यही भावना है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में जिन–जिनने भी प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष सहयोग प्रदान किया है, उन सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

सम्पूर्ण देश–विदेश के मुमुक्षुओं ने पूज्य दादाश्री द्वारा लिखित पत्र; डायरियाँ; फोटो आदि, हमारी सूचना प्राप्त होते ही हमें प्रकाशनार्थ भिजवायें हैं – उन सभी के प्रति गद्‍गद् हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

प्रस्तुत 'मङ्गल समर्पण' ग्रन्थ को सुसज्जितरूप में प्रस्तुत करने हेतु श्री विवेककुमार पाल, श्री अतुल गौड़ एवं नयनाभिराम मुद्रण के लिए श्री दिनेश जैन, देशना कम्प्यूटर धन्यवाद के पात्र हैं।

हे पूज्य गुरुदेव! हे पूज्य दादाश्री! आपके द्वारा दिग्दर्शित पथ का अपने पूरे परिवारसहित अनुगमन करूँ – इसी भावना के साथ आपके श्री चरणों में नत–मस्तक हूँ।

दिनाँक : 10 जून 2012

स्वप्निल जैन
'विमलांचल'
हरिनगर, अलीगढ़
(उत्तरप्रदेश)

सम्पादकीय

नर से नारायण, पशु से परमेश्वर, पामर से परमात्मा बनने की कला सिखलानेवाला वीतरागी जिनधर्म, धर्मतीर्थप्रवर्तक तीर्थङ्कर भगवन्तों की दिव्यदेशना से परम्परा द्वारा हमारे वीतरागी सन्तों को प्राप्त हुआ। इन वीतरागी सन्तों ने निर्जन एकान्त में स्वात्मा के स्वानुभूतिरूप निज वैभव का रसपान करके, जहाँ अपने को मुक्तिमार्ग में स्थापित किया, वहीं उनकी करुणा से प्रवाहित शब्दब्रह्म एवं लेखनी से प्रसूत सत्शास्त्र, अनेकों भव्य जीवों के लिए मुक्तिपथ का पाथेय बन गये।

इसी परम्परा को वर्तमान युग में अनेकों ज्ञानी गृहस्थों ने परिपुष्ट किया, जिसके फलस्वरूप हमें तीर्थङ्करों की वह दिव्यदेशना अपने मूलस्वरूप में सहज उपलब्ध है।

जहाँ कालचक्र के प्रवाह में जिनशासन की परम्परा, उन्नति के शिखरों पर आसीन रही, वहीं इस धवल परम्परा में विकृतियों का समावेश भी कम नहीं हुआ। उस समय, जब पवित्र मुक्तिमार्ग में अन्धश्रद्धा, रूढ़िवाद, पाखण्ड, कोरा कर्मकाण्ड का बोलबाला था और विशुद्ध आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान लुप्त प्राय: था; ऐसे समय में लाखों आत्मार्थियों का पुण्योदयसूचक एक मङ्गल प्रसङ्ग बना, जिसने सनातन सत्य जैनधर्म का पुनरोद्धार किया। वह प्रसङ्ग था, भारत की वसुधा पर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का उदय! कहते हैं – सूर्योदय पूर्वदिशा से होता है, किन्तु कहान सूर्य का उदय पश्चिम दिशा (सौराष्ट्र-गुजरात) से हुआ।

पूज्य गुरुदेवश्री का उद्‌भव, इस विश्व में अनेकों मनीषियों के लिए वरदान सिद्ध हुआ, उनमें से हमारे श्रद्धेय गुरुवर पण्डित कैलाशचन्द्र जैन भी एक हैं। आदरणीय पण्डितजी ने पूज्य गुरुदेवश्री से प्राप्त तत्त्वज्ञान को स्वयं आत्मसात् तो किया ही; उसका व्यापक प्रचार-प्रसार भी किया। उन्होंने पूरे भारतवर्ष के लगभग पाँच-छह सौ स्थानों पर नि:स्वार्थभाव से जाकर इस वीतरागवाणी का डंका बजाया।

वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु एवं पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति भक्ति से ओतप्रोत हृदयवाले पण्डितजी का बाह्य व्यक्तित्व एकदम साधारण-सा होकर भी असाधारण है। उनके सत्प्रयत्नों से सम्पूर्ण देश में लाखों लोग पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा उद्‌घाटित इस तत्त्वज्ञान से परिचित हुए हैं।

मङ्गल समर्पण

पण्डितजी की सुदीर्घकालीन साधना का फल, जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला (भाग 1 से 7) एवं जिनागमसार आदि ग्रन्थ हैं। वर्तमान में पण्डितजी की प्रेरणा से स्थापित तीर्थधाम मङ्गलायतन द्वारा सत्साहित्य का प्रकाशन भी इसी शृंखला की कड़ी है।

पण्डितजी के जन्म शताब्दी वर्ष में प्रवेश के उपलक्ष्य में उनके परिजनों द्वारा 'पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति समर्पित एक व्यक्तित्व : पण्डित कैलाशचन्द्र जैन' के नाम से 'मङ्गल समर्पण' ग्रन्थ का प्रकाशन, उनके नि:स्पृह व्यक्तित्व के प्रति विनम्र भावांजलि है। बारह अधिकारों में विभक्त इस ग्रन्थ के माध्यम से पण्डितजी के अनेक पत्र, डायरियाँ, लेख एवं प्रवचनों के अंश, प्रथम बार प्रकाश में आ रहे हैं। पूज्य पण्डितजी से उपकृत देश-विदेश के अनेकों मुमुक्षु भाईयों ने हमें उनके पत्र, फोटोग्राफ आदि तो भेजे ही; साथ ही अपने भावपूर्ण उद्‌गार भी प्रेषित किये हैं, जो पण्डितजी के, मुमुक्षु समाज पर व्यापक प्रभाव को परिलक्षित करता है।

प्रत्येक प्रकरण में समागत पूज्य गुरुदेवश्री का चित्र एवं उनके आध्यात्मिक उद्‌गार तथा पण्डितजी का चित्र एवं अनेक ज्ञानियों के उद्‌गार, जहाँ इस ग्रन्थ की शोभा में अभिवृद्धि कर रहे हैं, वहीं पण्डितजी के अन्त:स्तल में व्याप्त ज्ञानीजनों के प्रति अहोभाव को भी प्रदर्शित कर रहे हैं।

इस ग्रन्थ में समागत पण्डितजी का जीवनवृत्त एवं उनके जीवन से जुड़े विभिन्न पहलूओं के सन्दर्भ में आदरणीय श्री पवन जैन का साक्षात्कार, पण्डितजी की कर्मठता, निस्पृहता, साधर्मी वात्सल्य, तत्त्वाराधना आदि अनेक गुणों का अनुकरणीय परिचय प्रदान करते हैं।

'मङ्गल समर्पण' ग्रन्थ पूज्य पण्डितजी को समर्पित करने के उद्देश्य से तीर्थधाम मङ्गलायतन में आयोजित 'मङ्गल समर्पण समारोह' में पूज्य गुरुदेवश्री के प्रभावना उदय में स्थापित देश-विदेश की समस्त मुमुक्षु संस्थाओं का जो अनुमोदन प्राप्त हुआ है, वह पण्डितजी के सर्वव्यापक व्यक्तित्व को उजागर करता है। इस ग्रन्थ के सम्पादकीय सलाहकार मण्डल में देश के ख्यातिप्राप्त विद्वानों का समायोजन भी, पण्डितजी के प्रति उनके मन में व्याप्त आस्था का दिग्दर्शक है। तदर्थ उन सभी का आभारी हूँ।

इस मङ्गल समर्पण ग्रन्थ के प्रेरक एवं ग्रन्थ की सम्पूर्ण विषयवस्तु को बारीकी से देखकर समुचित मार्गदर्शन और प्रूफ संशोधन आदि कार्यों में, स्वास्थ्य की विषम प्रतिकूलता

मङ्गल समर्पण

के बीच भी सहयोग प्रदान करने हेतु आदरणीय अग्रज श्री पवनजी जैन, अलीगढ़; एवं तीर्थधाम मङ्गलायतन के समस्त सहयोगीजनों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। पण्डितजी के प्रवचन अंशों का सङ्कलन आदि उपलब्ध कराने हेतु पण्डितजी की धर्मपुत्री, श्रीमती वीना जैन, देहरादून एवं अधिकारों के विभाजन आदि में समुचित सलाह प्रदान करने हेतु डॉ. राकेश जैन शास्त्री, नागपुर के प्रति अत्यन्त आभारी हूँ। इन सभी के सहयोग बिना इस कार्य को मूर्तरूप दे पाना सम्भव ही नहीं था।

मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे पूज्य पण्डितजी से वीतरागी तत्त्वज्ञान के अध्ययन का सुअवसर प्राप्त हुआ। पूज्य गुरुदेवश्री के दर्शनों का सौभाग्य अपने जीवन में अर्जित न कर पाने पर भी, पण्डितजी के माध्यम से गुरुदेवश्री के प्रति भक्तिभाव जागृत हुआ। जिससे पूज्य गुरुदेवश्री के गुजराती प्रवचनों के हिन्दी रूपान्तरण एवं प्रकाशन के कार्य में अपने को जोड़ सका। सचमुच पण्डितजी, मेरे जीवनशिल्पी हैं; उन्होंने मेरे जीवन को सही दिशा दी है। इस उपकार के लिये उनके श्री चरणों में अनन्त श्रद्धासुमन समर्पित हैं।

सभी आत्मार्थीजन इस ग्रन्थ का अध्ययन करके, इसमें समागत तत्त्वज्ञान प्रेरक प्रकरणों को जीवन में आत्मसात करें – यही भावना है।

दिनांक 10 जून 2012

देवेन्द्रकुमार जैन
बिजौलियाँ

अनुक्रमणिका

1. मङ्गल समर्पण : मङ्गल प्रवेश — i से viii
2. शुभकामना सन्देश (ट्रस्टी एवं संस्थागत ट्रस्टी) — 1 से 24
3. पण्डितजी का अहोभाव ! — 1 से 24
   (1) पूज्य गुरुदेवश्री : संक्षिप्त जीवनवृत्त
   (2) पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति उद्गार : अहो अहो श्री.....
   (3) धन्य-धन्य है ज्ञानीजन....
4. पण्डित कैलाशचन्द्र : एक असाधारण व्यक्तित्व — 1 से 24
   (1) पण्डित कैलाशचन्द्र : संक्षिप्त जीवनवृत्त
   (2) एक साक्षात्कार : श्री पवन जैन से
5. मङ्गल समर्पण : विद्वानों एवं उपकृत मुमुक्षुओं द्वारा — 1 से 132
6. पत्रांजलि : — 1 से 176
   (1) भावनात्मक पत्र : पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति
   (2) पारिवारिकजनों के प्रति
   (3) आत्मार्थियों के प्रति
7. आत्महितकारी सम्बोधन — 1 से 80
8. पण्डितजी की डायरी : गुरुदेवश्री की वाणी से — 1 से 56
9. पण्डितजी की दैनन्दिनी — 1 से 136
10. पण्डितजी के प्रवचन — 1 से 160
11. पण्डितजी : अतीत से वर्तमान : सचित्र झलकियाँ — 1 से 16
12. पण्डितजी : लोकोत्तर उपलब्धियाँ — 1 से 16